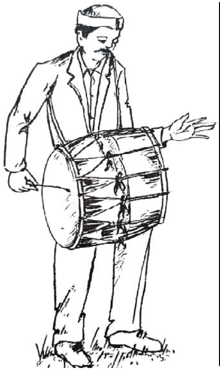

RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 41 अंक 7 हल्द्वानी सम्वत् 2082 सोमवार 21 जुलाई 2025 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

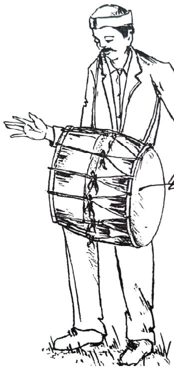

त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव

अन्तिम समय में दमखम और जोर

कार्यालय प्रतिनिधि

उत्तराखण्ड पंचायत चुनाव में अन्तिम समय में प्रत्याशियों का दमखम और जोर दिखाई दे रहा है। जबकि पार्टी में बगावत के सुर में ताल मिलाने वाले कम नहीं हैं। अपनी मांगों को लेकर चुनाव बहिष्कार का ऐलान करते ग्रामीणों का दर्द भी कम नहीं लग रहा। ऐसे में भाजपा ने पार्टी नेताओं को चुनाव अभियान में लगाते हुए घेराबाड़ी की है। पार्टी ने ब्लाक प्रमुख चुनाव के लिये तक जिला प्रभारी घोषित कर दिये। ऐसे में कांग्रेस ने भी अपने संगठन से तेज-तर्राज नेताओं को तलाश कर सूची जारी कर दी जो चुनाव में गणित लगा रहे हैं। हरिद्वार को छोड़ प्रदेश के सभी जिलों में हो रहे त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव में जिला पंचायत, क्षेत्र पंचायत, ग्राम पंचायत के लिये लुभाया जा रहा है जबकि सूझबूझ से निर्विरोध मौका पाने वाले सौभाग्यशाली कहे जाएंगे। ग्राम प्रधान पदों पर ऐसा हुआ है और ग्राम वासियों ने बहुत ही शानदार पहल की है।

बगावत के सुर में ताल मिलाने वाले भी कम नहीं

चुनाव बहिष्कार का ऐलान करते ग्रामीणों की सुन लो

लोकतंत्र की हत्या का आरोप, प्रदर्शन

इस बीच कई जगह चुनाव बहिष्कार का ऐलान ग्रामीणों द्वारा किया गया जिसमें से कुछ को प्रशासन ने मना लिया है। मुखवा के लोगों द्वारा पंचायती चुनाव के बहिष्कार पर पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा कि यह वही गाँव है जहाँ ग्रीष्मकालीन प्रवास पर प्रधानमंत्री पहुँचे थे। कहा हमारा सौभाग्य था कि प्रधानमंत्री जी माँ गंगा के ग्रीष्मकालीन प्रवास के लिए मुखवा पहुँचे। वहाँ उन्होंने ध्यान भी लगाया और माँ

शेष पृष्ठ 3 पर

अपनी माटी की बेटी की वापसी

केशव भट्ट

6 सितम्बर 2007, एक तारीख जो कैलेंडर में सिर्फ एक दिन थी, पर हमारे जीवन में वह एक अध्याय बन गई। 6 सितम्बर 2007 का वो दिन था जब पाँच जिज्ञासु यात्रियों का एक दल ऊँ पर्वत, आदि कैलाश, सिनला दर्रा और दारमा घाटी की यात्रा पर निकला। बरसात के बाद की टूटी सड़कों और अनिश्चित मौसम में यह कोई साधारण ट्रेकिंग नहीं थी, यह साहस, आत्मनिष्ठा और संस्कृति को छूने की एक आन्तरिक यात्रा थी। धारचूला से आगे सबकुछ पैदल ही था, घटियाबगड़ से लेकर गर्ब्यांग, नपलच्यु, गुंजी, कालापानी और फिर नाबी, कुटी होते हुए सिनला दर्रे को पार कर दारमा की गोद में प्रवेश। रास्ते में छियालेख की ऊँचाइयों से लेकर नागलिंग गाँव के बड़े भाई करन नागन्याल के किस्सों तक, हर मोड़ एक कहानी थी। उन्ही की प्रेरणा से हम इन घाटियों की खूबसूरती से रूबरू हुए।

कुटी गाँव की तात्कालीन ग्राम प्रधान रसमा दीदी जब 'गालथांग' और 'गंधारी दर्रा' की लोककथाएं सुनाती थी, तो लगता था जैसे इतिहास, भूगोल और मिथक एक ही नदी में बह रहे हों। इन घाटियों के सैकड़ों साल पुराने व्यापार मार्ग, लम्पिया, मकस्यंग, पम्पा, यरपा की मंडियां, और निरकुच में बसे बाजार 1962 के बाद जैसे समय ने खुद ही विराम लगा दिया हो। फिर भी गाँववाले अपने इतिहास, अपनी जमीन और अपनी अस्मिता से आज भी जुड़े हैं।

इधर, गर्ब्यांग गाँव की गंगोत्री गर्ब्याल ने तो अपनी पूरी जिन्दगी शिक्षा के क्षेत्र में ही लगा दी. गंगोत्री दीदी की विशिष्ट सेवाओं के चलते उन्हें 1964 राष्ट्रपति डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन द्वारा राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

गुंजी गाँव के छप्पर वाली दुकान की दुकानस्वामिन अर्चना गुंज्याल के वही अपना पढ़ाव डाला जहाँ पहली यात्रा में प्रवास हुआ था, अब इस गाँव में एक नई कहानी आकार ले रही है। तीस साल तक खाकी वर्दी में उत्तराखण्ड पुलिस की सेवा करने वाली आईजी विमला गुंज्याल ने जब रिटायरमेंट के बाद अपने गाँव की मिट्टी को फिर से छुआ, तो उनके जीवन का एक नया अध्याय शुरू हो गया है। गाँव, जो कभी उनका बचपन था, अब जिम्मेदारी बन चुका है. वो गुंजी, जहाँ संचार के नाम पर इंतज़ार, बिजली के नाम पर उम्मीद और रोज़गार के नाम पर पलायन है, उस गाबव में एक आशा लौट आग्र है. विमला गुंज्याल जब गाँव लौटी, तो सिर्फ एक अधिकारी नहीं लौटी हैं, वो लौटी हैं अपनी मिट्टी की बेटी बनकर।

ये सुखद है कि, दारमा, चौंदास, व्यास घाटियों के वासिन्दे अपनी मेहनत से ऊँचा मुकाम हासिल करने के बाद भी अपनी जड़ों को नही भूले हैं। वैसे सेवानिवृत्ति का अर्थ अक्सर विश्राम होता है, पुरानी फाइलों को अलविदा कहना, सुबह की सैर और दोपहर की चाय। लेकिन कुछ लोग ऐसे भी होते हैं, जिनकी सेवा भावना कभी सेवानिवृत्त नहीं होती। उनकी असली यात्रा तब शुरू होती है जब वे पद से नहीं, कर्तव्य से बंधे होते हैं।

विमला दीदी ने जब अपने बचपन के गाँव को फिर से देखा, तो आँखों में पानी और मन में संकल्प एक साथ जागा। अभी ग्राम प्रधान चुनाव आया।

शेष पृष्ठ 2 पर

भारत के मीलपत्थर

यक्ष के एक सौ चौबीस सवालों का क्विज़

सूर्यकान्त बाली

ताज्जुब तो युधिष्ठिर को भी हुआ था और ठीक ही हुआ था कि कैसे उनके चारों भाइयों को बिना किस युद्ध के मार डाला गया। जिस तालाब के किनारे चारों मरे पड़े थे, वहाँ ऐसा कोई चिन्ह भी नहीं था कि जिससे साबित होता कि किसी के साथ द्वन्द्वयुद्ध में पराजित उन भाइयों को एक-कर मार दिया गया हो। उनमें से किसी के शरीर पर शस्त्र द्वारा किए गए किसी घाव या प्रहार का कोई छोटा सा निशान तक नहीं था। इसलिये युधिष्ठिर हैरान थे कि शक्ति में लगभग अजेय उनके भाइयों को किसने मार डाला?

कथा हम सब जानते हैं। जब युधिष्ठिर काम्यक वन छोड़कर फिर से अपने भाइयों के साथ द्वैतवन में रहने लगे तो वन में एक स्थान पर प्यास बुझाने को पानी लाने के लिए उन्होंने अपने भाइयों को निकट के ही एक सरोवर भेजा। एक-एक कर चारों भाई गए और कोई नहीं लौटा तो चिन्तित युधिष्ठिर स्वयं अपने भाइयों को खोजते हुए उसी उसी सरोवर की ओर गए। वहाँ किनारे पर ही चारों भाइयों को मृत पड़ा देखकर उन्हें वह ताज्जुब हुआ जिसका संकेत पहले पैरा में किया गया है। वे हैरान हो रहे थे कि उन्हें एक यक्ष की आवाज सुनाई दी जो पेड़ पर चढ़ा बैठा था। यक्ष ने कहा कि अगर युधिष्ठिर ने भी उनके सवालों का जवाब दिए बिना उस तालाब का पानी पीना शुरू कर दिया, जिस पर यक्ष का स्वामित्व है तो युधिष्ठिर की भी वही गति होगी जो उसके भाइयों की हो चुकी है। तालाब के किनारे आने के बाद युधिष्ठिर को ताज्जुब यह हुआ कि उनके चारों भाई कैसे मार डाले गए। पर हमे यह भी ताज्जुब हो रहा है कि क्या वास्तव में कोई ऐसी घटना घटी होगी या कि महाभारतकार ने खुद ही इसकी कल्पना कर डाली है। सहसा विश्वास नहीं होता कि नकुल, सहदेव, अर्जुन और भीम क्रमशः तालाब गए होंगे, अदृश्य यक्ष ने पहले कहा होगा कि अगर मेरे सवालों का जवाब दिए बिना मेरे स्वामित्व वाले तालाब का पानी पिया जो तुम्हारे प्राण चले जाएंगे और हर भाई ने इस चेतावनी पर कान दिए बिना पानी पी लिया और जान गँवा बैठा। पहली बार में गफलत में आकर जान से हाथ धो बैठने की तो चलो समझ में आ भी सकती है, पर पहले नकुल को मरा देख कर भी सहदेव ने, फिर नकुल-सहदेव को मरा देखकर अर्जुन ने और फिर तीन-तीन भाइयों को मरा देख भीम ने भी यक्ष की चेतावनी की अनसुनी की, क्या यह बात समझ में आती है?

हमारी समझ में तो नहीं आती। इसके बावजूद हम यक्ष युधिष्ठिर के बीच हुए इस सम्वाद को, भारत-गाथा के इस प्राचीनतम क्विज को रोचकता के साथ पढ़े बिना नहीं रह सकते। मान भी लिया जाए कि यह सम्वाद-घटना वास्तव में घटी नहीं और महाभारतकार ने इसे कल्पित कर लिया था, इसके बावजूद यह सम्वाद इतना महत्वपूर्ण है कि इसमें से जहाँ एक ओर महाभारतकार का यह प्रयास नजर आता है कि उसने युधिष्ठिर के धर्मराज-चरित्र को उभारने के लिए एक घटना कल्पित की है वहीं दूसरी ओर सम्वाद के माध्यम से प्रबन्धकवि ने भारत के सोच को भी आने वाली पीढ़ियों के लिए दर्ज कर देने का प्रयास किया है।

यक्ष के साथ हुए इस सम्वाद में से युधिष्ठिर सचमुच एक महापुरुष के रूप में उभरकर हमारे सामने आते हैं। महानतम संकट के समय भी धैर्य न खोना और हर तरह से विपरीत परिस्थितियाँ सामने होने पर भी धर्मतत्व के बारे में स्पष्ट कहना- ये कोई छोटी उपलब्धियाँ नहीं हैं और यक्ष के साथ हुए सम्वाद के माध्यम से युधिष्ठिर के चरित्र की यह विशेषता उभर कर हमारे सामने आती है। जिस चेतावनी पर उनके चारों भाइयों ने कोई ध्यान नहीं दिया और पानी पीकर प्यास बुझाने के आवेग में अपनी जान से हाथ धो बैठे, उसी चेतावनी पर युधिष्ठिर ने न केवल ध्यान दिया बल्कि उस पर आचरण भी किया। पर इस सम्वाद में सबसे बड़ी बात तो यह है कि युधिष्ठिर ने यक्ष के प्रश्नों के उत्तर तब दिए, जब उनके चारों भाइयों के प्राणहीन शरीर उनके सामने उसी तालाब के किनारे जमीन पर पड़े थे और जिस यक्ष के कारण उनके भाइयों की यह गति हुई थी, उसी यक्ष के प्रश्नों के उत्तर युधिष्ठिर दे रहे थे। धैर्य और सन्तुलन की पराकाष्ठा क्या उससे ज्यादा हो सकती है? नहीं हो सकती और ठीक यही दिखाने के लिए अगर महाभारतकार ने यक्ष-युधिष्ठिर सम्वाद की कल्पना कर डाली हो तो कोई गलत काम उसने नहीं किया।

और फिर यक्ष के प्रश्नों के उत्तर युधिष्ठिर ने जिस तत्वदृष्टि से दिए उससे जाहिर यह होता है कि युधिष्ठिर के पास जीवन के दार्शनिक और व्यावहारिक पक्षों की ठोस जानकारियाँ थीं और धर्म का तत्व चिन्तन उनका इतना गहरा और सटीक था कि उन्हें एक भी सवाल का जवाब देने में न तो कोई कठिनाई हुई और न ही यक्ष उनके किसी उत्तर से असन्तुष्ट हुआ। यक्ष ने कुल मिलाकर

शेष पृष्ठ 5 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

चुनाव का मतलब घर-घर मनमुटाव नहीं है

उत्तराखण्ड में त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव का सफर बहुत धारदार इसलिए बना हुआ है क्योंकि ग्रामसभा स्तर के चुनाव में भी दलबल के साथ प्रचार-प्रसार हो रहा है। ग्राम पंचायत, क्षेत्र पंचायत, जिला पंचायत के चुनाव में गिनती भर के वोटरों को अपने पक्ष में करने के लिये जितना चक्र-कुचक्र रचा गया है वह प्रत्याशियों की अपनी करनी है लेकिन इस पूरी प्रक्रिया को समझा जाना चाहिये।

अपने ग्राम, क्षेत्र और पंचायत स्तर पर विकास के लिये जनप्रतिनिधि चुनने की परम्परा बनाई गई है। जिसे लोकतांत्रित तरीके से तय किया जाता है। समाजसेवा का भाव लेकर श्रेष्ठजन चुनाव के इस उत्सव में रुचि लिया करते थे और ग्राम स्तर पर तो अधिकांश चुनाव आपसी सूझबूझ से निर्विरोध तय हो जाया करते थे। अब भी बहुत ही ग्राम सभाओं में एकता का प्रदर्शन करते हुए निर्विरोध प्रधान चुन लिये गये लेकिन अधिकांश में मतदान होगा। चुनाव के लिये प्रत्याशियों द्वारा प्रयास करना अच्छी बात है परन्तु यह मान कर चुनाव लड़ना कि पद में आने के बाद मनमर्जी करेंगे, गलत है। चूंकि बहुतों ने तो जनप्रतिनिधि मतलब कमाई वाला पद मान लिया है, ऐसे में उनके मनोभाव अपने समाज के प्रति नहीं हो सकते। यही कारण है वह अपनी जीत के लिये हर प्रकार का प्रयास करने लगते हैं, जिससे पास-पड़ोस में कटुता उत्पन्न होती है। जबकि चुनाव का मतलब घर-घर मनमुटाव नहीं है।

चुनाव तो अन्तराल के बाद होते रहते हैं, इसलिए चुनाव दंगल में कूदे उम्मीदवारों को परखते हुए मतदान करना चाहिये। किसी प्रकार के लोभ लालच, भय, द्वेष के मतदान करना समाज हित में नहीं है। चुनाव चाहे किसी स्तर का हो उसमें योग्य प्रतिनिधि को अवसर देने से सबका कल्याण होगा। चुनाव की इस पूरी प्रक्रिया में अपनी जिम्मेदारी को निभाने के साथ ही लम्बी सोच रखनी चाहिये। कहीं ऐसा न हो इन चुनाव कारणों से आपसी बोलचाल प्रभावित हो। ग्रामसभा स्तर के चुनावों में सबसे ज्यादा यही डर होता है कि 'वोट तुझे दिया-मुझे दिया' को लेकर कलह हो जाती है और लोक परम्पराओं का पालन करना छोड़ कई लोग होली या अन्य अवसरों पर आपसी भड़ास निकालते हैं। इसलिए भी जरूरी है कि चुनाव के मामलों को चुनाव तक रहने दें और आपसी सूझबूझ रखें।

देश-विदेश की प्रमुख घटनाएं

101 भारतीय को छात्रवृत्ति

नई दिल्ली। यूरोपीय शैक्षिक सत्र के दो वर्षीय पीजी कार्यक्रम के लिए इरास्मस मुंडस छात्रवृत्ति 50 महिलाओं समेत 101 भारतीय छात्रों को मिली है। साथ ही भारत छात्रवृत्ति का सबसे बड़ा प्राप्तकर्ता बनकर इस वर्ष शीर्ष तीन स्थान पर है। यह यूरोपीय संघ के साथ भारत की मजबूत और विस्तारित शैक्षिक साझेदारी को और उजागर करता है।

दिलीप, राजकपूर के घरों का जीर्णोद्धार

पेशावर। पाकिस्तान की खैबर पख्तूनख्वा प्रान्तीय सरकार ने भारतीय फिल्म सितारे दिलीप कुमार और राज कपूर से जुड़ी ऐतिहासिक इमारतों के जीर्णोद्धार व संरक्षण के लिए 3.88 करोड़ रुपये मंजूर किये। सीएम अली अमीन गंडापुर और पर्यटन पुरातत्व सलाहकार जाहिद खान की अध्यक्षता में हुई बैठक में इस आवंटन को मंजूरी दी गई।

नेपाल : बाढ़ में हुआ भारी नुकसान

काठमाण्डू। नेपाल के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में फंसे लोगों को निकालने का कार्य जारी है। रसुवा जिले में मानसून की बारिश के कारण एक नदी में बाढ़ आ जाने से 9 लोगों की मौत हो गई थी और करीब दो दर्जन लापता हो गये। मुख्य जिला अधिकारी ने बताया कि 127 विदेशी नागरिकों सहित 150 से अधिक को बचाया और उन्हें हवाई मार्ग से काठमाण्डू पहुँचाया गया। अचानक आई बाढ़ में काठमाण्डू से 120 किमी दूर उत्तरपूर्व में स्थित रसुवा जिले के कुछ हिस्से में तबाही मच गई। यहाँ 'फ्रेंडशिप ब्रिज' बह गया जो नेपात-चीन को जोड़ता है। रसुवागढ़ी जलविद्युत संयंत्र ड्राई पोर्ट के कुछ हिस्से भी क्षतिग्रस्त हो गये हैं।

'धोखाधड़ी वाला खाता' आदेश वापिस

मुम्बई। केनरा बैंक ने मुम्बई उच्च न्यायालय से कहा कि उसने उद्योगपति अनिल अम्बानी से जुड़ी एक कम्पनी के ऋण खाते को 'धोखाधड़ी वाला खाता' घोषित करने का अपना आदेश वापस ले लिया है। बैंक के यह जानकारी देने के बाद न्यायमूर्ति रेवती मोहिते डेरे और न्यायमूर्ति नीला गोखले की पीठ ने बैंक के आदेश को चुनौती देने वाली अनिल अम्बानी की याचिका पर कहा इसमें अब गौर करने के लिये कुछ नहीं बचा है।

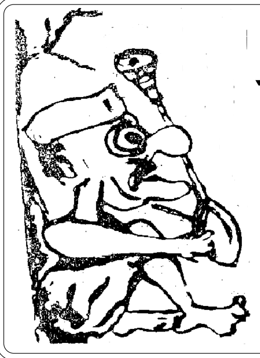

फसक

दाज्यू, जिधर गूदे-दांणे हुए वहीं औतरने वाले ठैरे

बिना सरासार और भुत्योव के कोई नहीं पूछने वाला है बल

दाज्यू, दुनिया तेजी से घूम रही है। जिस दिन ब्राजील ने हमारे प्रधानमंत्री मोदी ज्यू को सर्वोच्च सम्मान दिया उसी दिन हमने झंगोरे की खीर खाई। उसी समय पता चला कि इस्राइल ने अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प को नोबेल के लिये नामित किया है। दाज्यू, आने वाले दिनों में पता नहीं क्या होने वाला है। भाजपा के विधायक अरविन्द पाण्डे ने कह रहे हैं- 'नशे के सौदागरों का गैंग सक्रिय हो चुका है। प्रदेश और अपनी पार्टी को इससे बचाऊँगा। प्रदेश का नेतृत्व ठीक हाथों में होना चाहिये।' जबकि हमारे सीएम धामी ज्यू धान की रोपाई करने के बाद से लगातार चर्चा में बने हुए हैं। दाज्यू, हमें समझ नहीं आ रहा है कि ऐसा क्या हो रहा होगा? पहले पूर्व सीएम हरदा भी चर्चा में थे क्योंकि वे ककड़ी, गेठी, काफल, झंगोरा, नीबू की पार्टी कई आयोजन से हलचल करते रहते हैं। अब धामी ज्यू ने भी धान रोपाई करते हुए हलचल मचा दी। दाज्यू, जब से फेसबुक चला है बहुत सारा कचार बहने लगा है। चूड़ामणि दाज्यू भी दात-भात खाते हुए फेसबुक में लगाते हैं ओर बताते हैं कि खाना कितना स्वादिष्ट है। अब सीएम और पूर्व सीएम के फोटू भी आ रहे हैं तो क्या दिक्कत? बरसात के दिन हैं तरावट हो लेने दो।

वैसे भी चुनाव का भोग-भाग हो रहा ठ्यो। दाज्यू, जगन सिंह घर आजकल बहुत भीड़ है। जिधर गूदे-दांणे हुए वहीं औतरने वाले ठैरे। बांकी को कौन पूछ रहा है इस कलजुग में। बिना सरासार और भुत्योव के कोई नहीं पूछने वाला है बल। जिला पंचायत चुनाव लड़ रही बिन्दु दी के घर पार्टी के छोटे-बड़े सारे नेता मत्था टेकने गये थे। जग्गू बता रहा है- 'बिन्दु दी बहुत मालमत्ते वाली है। करोड़ों का कारोबार वाले हैं। पिछले चुनाव में भी बहुत इन्तजाम किया था।' दाज्यू, आप जानने ही वाले हुए जन्म लेने वाले बच्चों को घुट्टी पिलाई जाती है। उम्र के साथ खुराक भी बढ़ती है।

दाज्यू, सहकारिता मंत्री धनसिंह रावत कह रहे हैं कि सहकारिता में सुधार के लिये नियमावलियों में बदलाव होगा। हम तो कह रहे हैं जहाँ-तहाँ बदलाव कर डालो। ऐसा उधेड़ो कि समझ ही न आवे उधड़ा है या सुलझा। तिमूर का सोठा/लट्ठ जब हाथ में तो भूत भागने लगते हैं बल।

दाज्यू, प्रदेश के खनन विभाग को राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कृत किया गया है। कोयला एवं खान मंत्री किशन रेड्डी ने यह पुरस्कार दिया। दाज्यू, अपना प्रदेश धांसू चल रहा है, बांकी गोलज्यू जानें।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

अपनी माटी की........

प्रथम पृष्ठ का शेष

गुंजी गाँव में पहली बार ऐसा हुआ कि कोई भी नामांकन पत्र विमला गुंज्याल के खिलाफ दाखिल नहीं हुआ। ये केवल एक चुनाव नहीं था, यह गाँव की सामुहिक स्वीकृति थी। विश्वास था कि अब गाँव को सही दिशा मिलेगी। विमला गुंज्याल निर्विरोध ग्राम प्रधान चुनी गई हैं।

देखा जाए तो बिमला गुंज्याल अब केवल एक पूर्व अधिकारी नहीं हैं. वे गाँव की माँ, बहन, मार्गदर्शक और संरक्षक बन चुकी हैं। उनकी कहानी बताती है कि असली नेतृत्व कुर्सी से नहीं, सेवा से पैदा होता है। और सेवा कभी रिटायर नहीं होती।

विमला दीदी की वापसी एक ऐसी यात्रा है जो ऊँचे पदों से नहीं, गहरे रिश्तों से जुड़ी है। यह कहानी है उन जड़ों की, जिनसे अलग होकर भी कुछ लोग कभी सचमुच अलग नहीं होते। जो जहाँ भी जाते हैं, अपनी मिट्टी की खुशबू साथ ले जाते हैं और जब वो लौटते हैं, तो केवल व्यक्ति नहीं लौटते, उम्मीदें लौटती हैं, दिशा लौटती है, और सबसे बड़ी बात, एक गाँव का आत्मविश्वास लौट आता है। व्यास घाटी समेत चौंदास, दारमा घाटी के तमाम गाँवों का हाल ये है, जहाँ संचार का नाम इंतज़ार है, बिजली एक उम्मीद है, और रोज़गार एक कहानी बनकर बाहर चला गया है। बिमला दीदी की तरह ही अब इन घाटियों में बसे दर्जनों गाँवों के वाशिन्दों से ये उम्मीद है कि जब वो लौटेंगें तो केवल व्यक्ति नहीं लौटेंगे, वो अपने साथ भूली हुई आवाज़ें, दबे हुए सपने और गाँव की उजली सुबहें भी अपने साथ में वापस लाएंगे।

पहाड़ी भुला हिमांशु आगरी निर्विरोध प्रधान

बेरीनाग। विकास खण्ड के ग्राम पंचायत पिपली चौखुना से पहाड़ी भुला हिमांशु आगरी पहली बार ग्रामसभा के इतिहास में निर्विरोध प्रधान चुने गए। जहाँ पूरे ग्रामसभा में मतदाताओं की संख्या 643 से अधिक है। हिमांशु 2015 में बेरीनाग महाविद्यालय में छात्र संघ महासचिव भी रह चुके हैं। यह इनके जीवन का दूसरा चुनाव है। हिमांशु की बात-व्यवहार और सामाजिक कार्यों के कारण ही क्षेत्रवासियों ने उन्हें निर्विरोध ग्राम प्रधान बनाया है। स्वच्छ छवि के इस युवा का लक्ष्य अपनी ग्राम सभा को आदर्श बनाना और सरकार की योजनाओं को लोगों तक पहुँचाना है। वह ग्राम में पुस्तकालय, खेल मैदान को प्राथमिकता से चाहते हैं।

पांखू के रोनित कार्की अपने खेल से छाए हैं

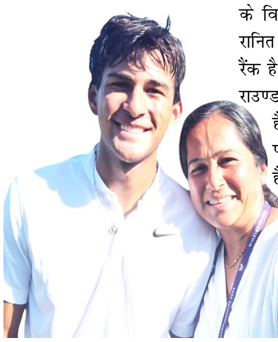

थल। पांखू के बैरात जुब्बर के तोक जाबुका गाँव के रोनित सिंह कार्की अमेरिका की जूनियर टीम में बिंबलडन टेनिस चैम्पियनशिप में खेलकर छाए हैं। रोनित ने पहले दौर के मुकाबले में शानदार प्रदर्शन करते हुए स्वीटजरलैंड के खिलाड़ी थॉमस को 6-3, 3-6, 7-6 से हराया। उनका अगला मुकाबला रोनमिया के विश्व के नौवीं रैंक खिलाड़ी से होना है। रानित की विश्व जूनियर आईटीएफ में 51 वीं रैंक है और जूनियर बिंबडन में वे क्वालीफाइर राउण्ड मुकाबले जीत कर प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। कक्षा 12 वें का छात्र रोनित का परिवार बहुत पहले अमेरिका में बस गया है। रोनित के पिता त्रिलोक सिंह कार्की और माता कंचन कार्की पेशे से अमेरिका में इंजीनियर हैं। रोनित के दादा राम सिंह कार्की दो दशक पूर्व नौकरी के लिये मुम्बई चले गए थे। वहाँ किसी फिल्म अभिनेता के पास चालक की नौकरी करने के कुछ साल बाद अपने ट्रेवल एजेंसी खोली। दोनों बेटों को इंजीनियर बनाया । उनका बड़ा बेटे त्रिलोकच इंजीनियर बनकर अमेरिका में बस गए। रोनित की छोटी बहन रौबी कार्की भी अमेरिका मके जूनियर टेनिस टीम खिलाड़ी है। पांखू में रोनित के चाचा विनोद कार्की ने फोन कॉन्फ्रेंसिंग कर पूरी जानकारी दी।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

इतिहास

स्वर्गतुल्य भूमि : शाङरी-ला, ला-जाकेला, ला-बला या 'लिपि-साङुरि'

जगदीश सिंह बृजवाल

शारी-ला जेम्स हिल्टन के उपन्यास की अनसुलझी रहस्यमय स्वर्गतुल्य भूमि तथा तिब्बती धार्मिक ग्रन्थ में उल्लेखित आध्यात्मिक परमानन्द का सुन्दरतम् स्थान है।

तिब्बत में भौगोलिक अस्तित्व न होने के कारण शाङरी-ला को भारत भूमि में खोजने की कोशिश कभी नहीं की गई जबकि पौराणिक गारूरी पट्टियां -शाङ-शिङ गोपा में पश्चिम में स्थित जोहार घाटी ख्युंड्- शेरपो पीला स्वर्णिम भू खण्ड/ स्वर्णिम वंश का क्षेत्र अन्य दो पट्टियां ख्युड् - कारपो द्धस्वेतत्र्, तथा ख्युड्- कारपो (श्यामला) धोली गंगा दारमा, काली गंगा व्यास-चौदास के नदियों के जलधारा रंग कारण प्रयुक्त हैं।

जोहार भूमि के प्रतिष्ठित इतिहासकार द्वारा अपनी शोध, कल्पनाओं, सम्भावना को व्यक्त करके शाङ-शिङ भूमि का तथ्यात्मक आधार प्रस्तुत करते -ला-जाकेला,ला-बला दोनों स्थान जाकुला नदी तथा नामिक गाड् के आसपास शङरी-ला की सम्भवत: सम्भावना दिखाई गई। भौगोलिक उथल- पुथल, पौराणिक अश्वमार्ग, कालामुनी पर्वत स्वर्ण भूमि शाङरी-ला पवित्र धाम कैलाश मार्ग को जाती हैं।

कालामुनी जिस स्थान का नाम ऋषि मुनि के नाम से है। तपस्थली,'मुनि का सेरा' मुनस्यारी जो अवश्य तपोभूमि रही है स्वर्ण भूमि क्षेत्र कालामुनी पर्वत भी भौगोलिक परिवर्तन का हिस्सा, शाङरी-ला इतिहासकार का सम्भावित स्थल है।

लेखक शाङरी-ला सन्दर्भित स्रोत को देखते कुछ और प्रामाणिक पुष्टि तक पहुँचने की कोशिश करता है।

आज भी हिमनगरी मुनस्यारी की सौन्दर्यता, सुन्दर विहंगम दृश्य स्वर्गतुल्य भूमि आनन्दानुभूति कराती है। चोरों ओर से हिमाच्छादित पर्वत श्रृंखलाएं तथा उत्तर दिशा से इन पर्वतों को चीरते गोरी गंगा तथा रालमगंगा का संगम भी गिरि द्वार के करीब लिलम गाँव से कुछ दूर पर ही है।

मुनस्यारी तहसील से दस-बारह किमी दूर प्राचीन मार्ग से मध्यकालीन पंज्वारी माल बारकैनी क्षेत्र तक आते-जाते थे।

लिलम से पश्चिम की ओर से चढ़ाई पुमद्यो, खलकोट, 'लिपि - साङरि' लेखक इसी स्थान के नाम पर जोर देते शाङरी-ला को देखने की परिकल्पना, सम्भावना प्रकट करता है। फिर भौगोलिक परिवर्तन की सम्भावना है यह स्वर्णभूमि -सा स्थल अश्वारोही पवित्र कैलाश यात्रा मार्ग को दिखाता है।

जिसे हम लिपि-साङरि गधेरा कहते है उसका रहस्य जानना कितना आवश्यक है? इसी गधेरे (खाईं, गढ्ढा) में जोहार के जसपाल बुढ़ा ने गोरखाओं को जोहार आने से 10 वर्ष तक रोक दिया। कितने गोरखा आक्रान्ताओं को जान से हाथ धोना पड़ा था. हिमालयी क्षेत्र में अपनी साम्राज्य स्थापित करने वाले गोरखाओं का हौंसला पस्त जोहारियों ने कर दिया। अपने स्वेच्छा से समझौता स्वीकार किया।

आंखिर गोरखा शासक जोहार घाटी में क्यों अधिपत्य जमाने में विफल रहे? मात्र लगभग तीन हजार की जनसंख्या वाले जोहार के सम्मुख नतमस्तक रहे। कारण जोहारघाटी पहुँचने के लिए एक मात्र अति दुर्गम खड़ी चढ़ाई, चट्टान का रास्ता रारमैनसिंह, लिपि-साङरी गधेरा चोटी से लगभग एक डेढ़ किमी सीधी ढलान खाईं ऊपर से स्पष्ट दिखाई देती है, जब कोई भी आदमी, पशु जानवर खाई के रस्ते ऊपर चढ़ रहा होगा स्पष्ट नज़र आ जाता था। जोहारी शासक जसपाल बुढ़ा ने रास्ते का सदुपयोग करके गोरखा सैनिको जोहार आने से यही पर रोक दिया था।

जसपाल बुढ़ा मिरम्वाल द्वारा वीर जोहारियों की तैनाती रारमैनसिंह चोटी पर कर दी जाती थी तथा लकड़ी के बड़े-बड़े बोल्डर, पत्थरों का ढेर, हथियारों से सभी वीर सुसज्जित थे, जोहारी 10 वर्ष तक चोटी पर चोकी बनाए निगरानी रखते रहे, जब कभी गोरखा सैनिक जोहार की ओर आने की हिम्मत करते तो ऊपर से पत्थर लकड़ी के बोल्डरों की बरसात कर दी जाती थी, गोरखा सैनिक यही ढेर हो जाते। सुब्बा, भक्ति थापा के सैनिकों का हौंसला लिलम में ही पस्त हो गया, राजधानी वापस लौट आए। कहा जाता है कि जोहार के स्त्री-पुरुषों ने अपने अदम्य साहस से क्रूरता पूर्वक शासन करने वाले गोरखाओं से 10 वर्ष तक अपने को बचाए रखा था किन्तु अपनी आर्थिक स्थिति को देखते गोरखाओं से समझौता करना पड़ा था।

रारमैनसिंह मार्ग कठिन अति दुर्गम मार्ग किसी व्यक्ति विशेष के नाम पर रास्ते नाम रखा हो, आज तक किसी प्रकार की किवदंती, जनश्रुति भी सुनाई नहीं दी। इस मार्ग का इतिहास अत्यधिक प्राचीन है।

कुछ बर्ष पूर्व सदियों से बंद मार्ग को मोटरमार्ग निर्माणधीन के चलते खोला गया, तब जोहार घाटी को जाने वाले यात्री पुरातन मार्ग से जाने लगे। लेखक को भी अति कठिन रास्ता का आभास हुआ तथा 'लिपि साङरि' स्थान का दर्शन हुआ। शाङरी-ला नाम सुनते मस्तिष्क पटल पर इस स्थान का परिदृश्य घूमने लगा, आखिर लिपि -साङरि व शाङरी-ला में अन्तर व समानता क्या है?

लिपि -साङरि स्थान गधेरा (दोनों ओर पहाड़ी के बीच खाईं वाला भाग) जिस गधेरे से ही प्राचीन रास्ता चोटी तक पहुँचता है चोटी से समतल ढलान घने जंगलों के बीच बबलधार क्षेत्र कहलाता है जो ररगाड़ी गोरी नदी तट तक है।

चोटी पर पहुँचने के पश्चात उत्तर दिशा की ओर बोगडियार, हंसलिग, नहरदेबी पर्वत चोटी के आस पास की आकृति मनोरम दृश्यावलोकन करेंगे तथा रागा पेड़ का जंगल आदि जो स्वर्गभूमि की कल्पना कराती है। बबलधार के पश्चिम क्षेत्र से गोरी नदी तक जगंल रहित ढलान ररगाडी तक की कल्पना अपने मन,चित्त में लाते है तो खुबसूरत परिदृश्य मस्तिष्क पटल पर उभरने लगती है।

कुछ समय वर्ष पहले इस मार्ग पर आवाजाही जोहार घाटी में प्रवास करने वाले लोग, सीमा प्रहरी जवानों हेतु पशुपालक- भेड़ बकरी, घोड़े-खच्चर, से आजीविका हेतु सामान ढोने का कार्य मौसम के अनुसार करते थे। तब उनका रारमैनसिंह रास्ते से ऊपर-नीचे आना-जाना, सुबह-शाम, देर रात्रि तक लगा रहता था।

लेखक को पशुपालक- श्री भूपन सिंह बृजवाल द्वारा जब रारमैनलसह की यथार्थ घटना बताई गई, तब भोर के समय सूर्योदय के दृश्य का वर्णन करते अति भावविभोर भी हो जाता था। सुबह दिन-रात्रि खुलने से सूर्योदय का दृश्य कोई इस चोटी से देख ले तो देखता ही रह जाएगा, लगभग 5000 फिट समुद्र तल ऊँचाई पर स्थित है। उसकी भावुकता देख लेखक की कल्पना स्वर्ण भूमि शाङरी-ला पर जा टिकती है। लिपि -साङरि के करीब ही सम्भवत: शाङरी-ला रहस्यमय स्थान हो सकता है।

शाङरी-ला के विषय में कुछ ओर जोहार घाटी में शोध सम्भावना बनी है। पुराणों में जोहार भूमि क्षेत्र ब्रह्मपुरी, गोरी गंगा का उल्लेख स्मरण कराती है। कि शाङरी-ला की कल्पनातीत सोच तिब्बती धार्मिक आध्यात्मिक स्वर्गतुल्य सुखद भूमि तो नहीं, जोहार के अतीत का इतिहास बहुत कुछ बताती है।

मनोज टम्टा अ.जा.विभाग का प्रदेश उपाध्यक्ष

गंगोलीहाट की राजनीति में हलचल

गंगोलीहाट। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस कमेटी द्वारा क्षेत्र के तेज-तर्रार युवा नेता मनोज टम्टा को प्रदेश उपाध्यक्ष अनुसूचित जाति विभाग बनाये जाने के बाद राजनैतिक गलियारों में हलचल तेज है। पिछली बार विधानसभा चुनाव में पार्टी से टिकट की दावेदारी करने वालों में वह सक्रिय थे लेकिन पार्टी ने पूर्व दर्जा मंत्री खजान गुड्डू को प्रत्याशी बनाया था। नजदीक के मुकाबले में भाजपा के फकीर राम विधायक बने। फिलहाल पंचायत चुनाव में भाजपा-कांग्रेस प्रत्याशियों के बीच कांटे की टक्कर है लेकिन ध्यान 2027 के विधानसभा चुनाव पर भी टिका है। ऐसे में राजनीतिक हलचल होना स्वाभाविक है।

ज्योतिष की बातें- 238

23 जुलाई 2025 को बुध कर्क राशि में वक्री गति से चलता हुआ पश्चिम दिशा में अस्त हो जाएगा। अत: अगले 18 दिन बुध से प्राप्त शुभाशुभ फल अब अल्पमात्रा में ही प्राप्त होंगे। इस अवधि में बुधादित्य योग यथावत् बना रहेगा। बुध का प्रभाव शनि आदि ग्रहों की तरह तीक्ष्ण प्रकृति का नहीं होता है।

26 जुलाई 2025 को शुक्र मित्रराशि मिथुन में प्रवेश करेगा जहाँ पर शुभग्रह गुरु से युति भी होगी। इस समय शुक्र मागह्न भी है और उदित भी अत: शुक्र अत्यन्त शुभ हो रहा है। फलदीपिका के अनुसार शुक्र छठवें, सातवें और दसवें स्थान के अतिरिक्त अन्य सभी स्थानों पर शुभफल प्रदान करता है तथा मकर और कुम्भ राशियों के लिए योगकारक भी होता है। अत: अगले 27 दिन शुक्र भौतिक सुख, प्रेम प्रकरण आदि अपने कारक विषयों में धनु और कन्या राशि के जातकों को सामान्य फल देगा लेकिन अन्य सभी दस राशियों के लिए अत्यन्त शुभ फलदायक रहेगा।

यह गोचरवफल केवल शुक्र के आधार पर लिखा गया है। व्यक्ति विशेष के लिए सूक्ष्म विश्लेषण उसकी जन्म कुण्डली, महादशा आदि पर निर्भर करता है।

शुभं भवतु !! **-ओंकार नाथ कोष्टा**

ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार- 128

बुराई ऊपर से नीचे आती है

पहले जमाने में बड़े लोग कुत्ता पालते थे, आजकल गरीब आदमी कुत्ते पाल रहे हैं। पहले बड़े लोग पक्के मकान में रहते थे और गरीब लोग कच्चे मकान में लेकिन अब गरीब लोग कच्चे मकान में रहते हैं और बड़े लोग अब कच्चे मकान का विकल्प तलाश रहे हैं। पहले अमीरों के बच्चे अंग्रेजी स्कूल में पढ़ते थे, अब गरीबों के बच्चे अंग्रेजी स्कूल में पढ़ते हैं। पहले बड़े लोग अंग्रेजी इलाज कराते थे और गरीब लोग देसी इलाज लेकिन अब गरीब लोग अंग्रेजी इलाज करवाते हैं और अमीर लोग प्राकृतिक चिकित्सा आदि दूसरा विकल्प तलाशते हैं। पहले बड़े लोग गाड़ी से चलते थे और गरीब लोग पैदल लेकिन अब गरीब लोग बाइक या कार से चलते हैं और अमीर लोग पैदल चलने का बहाना ढूंढते हैं। पहले अमीर घरों की लड़कियाँ बहुत देरी से शादी करती थी आजकल गरीब घर की लड़कियाँ देरी से शादी करती हैं। पहले अमीर घरों की लड़कियाँ अन्तरजातीय विवाह करती थीं अब गरीब घर की लड़कियाँ प्रेम प्रकरण के द्वारा अन्तरजातीय विवाह कर रही हैं। पहले अमीरों की लड़कियाँ तलाक लेती थी आजकल गरीब घर की लड़कियाँ भी तलाक लेकर मायके में बैठी हैं। इस प्रकार के सैकड़ों उदाहरण हैं। जो बुराइयाँ पहले अमीरों में होती थी, अब वे सारी बुराइयाँ गरीबों में आ चुकी हैं और अमीरों में वे बुराइयाँ अब कम होने लगी हैं। गरीब आदमी अमीरों को श्रेष्ठ मानकर उनका अनुकरण करता है, इसी को भेड़चाल कहते हैं, यही गलत है। वास्तव में श्रेष्ठ लोगों का अनुकरण करना चाहिए न कि अमीरों अर्थात् तथाकथित बड़े लोगों का। **-ओंकार नाथ कोष्टा**

त्रिस्तरीय पंचायत.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

गंगा व आध्यात्म को लेकर बहुत सारी बातें कही। जब प्रधानमंत्री कहीं पहँचें तो लोगों को अपेक्षाएं न हों, यह कैसे हो सकता हे। गंगोत्री और मुखवा के जो हमारे पण्डा-पुरोहित लोग हैं उन्होंने जनता की मांग रखी। सबसे बड़ी मांग तो वहाँ के लोगों की सड़क की है। लेकिन उनकी मांग की अनदेखी कर दी गई तो आज मुखवा के लोग पंचायती चुनाव का बहिष्कार कर रहे हैं। उन्होंने ग्रामवासियों से आग्रह किया कि चुनाव में भाग लें, मांगों को लेकर संघर्ष करेंगे।

जिला पंचायत में बागी भाजपा के लिये खतरा बने हैं। चम्पावत जिले में सर्वाधिक बागी बताए जा रहे हैं। लोहाघाट के पूर्व विधायक पूरन सिंह फर्त्याल चुनाव को लेकर जिस प्रकार से तैयार हैं वह आने वाली राजनीति के लिये नई तैयारी मानी जा रही है। भाजपा में टिकट बंटवारे से असन्तुष्ट फर्त्याल का कहना है कि पार्टी ने गलत लोगों को टिकट दिया है। इसी प्रकार पुंगराऊ घाटी में जिला पंचायत सीट के लिये भाजपा में खुली बगावत हुई है। दिनेश आर्य की पत्नी चुनाव मैदान में हैं और उनके समर्थन में विपक्षी भी जुट गये हैं।

चुनाव में लोकतन्त्र की हत्या का आरोप लगाते हुए प्रदर्शन भी हुए हैं। जौनपुर विकासखण्ड की भूत्सी सीट पर महिला प्रत्याशी सीता देवी का नामांकन दबाव में रद्द कराने का आरोप लगाया गया। बताया जाता है कि नामांकन वैध का स्वीकृति पत्र प्राप्त हुआ था किन्तु सत्ता पक्ष की प्रत्याशी के दबाव में आपत्ति आई कि सहकारी साधन समिति का नोड्यूज प्रमाण पत्र फर्जी है। सीता देवी को फोन करके सूचित किया गया। जब वह नोटिस का जवाब दाखिल करने जाती हैं तो नोटिस रिसीव नहीं किया जाता है। इस पूरे मामले को लेकर क्षेत्र में जबर्दस्त चर्चाएं हैं। इसी प्रकार नैनीताल जिले के ओखलकाण्डा ब्लाक के बड़ौन में महिला प्रत्याशी बचुली देवी का शपथ के साथ आवश्यक दस्तावेज जमा थे, जिनमें से कुछ गायब होने पर जबर्दस्त प्रदर्शन हुआ। आरोप लगाया गया कि भाजपा विधायक राम सिंह कैड़ा की पत्नी को निर्विरोध निर्वाचित करने के लिये नामांकन पत्र से दस्तावेज गायब किये गये। पूर्व विधायक दान सिंह भण्डारी, कांग्रेसी नेता पूर्व दर्जामंत्री हरीश पनेरू के नेतृत्व में कमिश्नर कार्यालय तक जुलूस प्रदर्शन हुआ। बचुली देवी के पति ललित चिलवाल ने विधायक पर गम्भीर आरोप लगाए।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

भूमियाधार दुकानों को हटाने का विरोध

नैनीताल। भवाली रोड पर भूमियाधार में सड़क किनारे अवैध दुकानों को जिला प्रशासन द्वारा हटाने के बाद ग्रामीणों ने मोर्चा खोल दिया है। विधायक सरिता आर्य के इस गाँव के लोगों ने चुनाव बहिष्कार का ऐलान तक किया है। यहाँ पर ब्लाक स्तर से पूर्व में बजट आबंटित कर व्यू प्वाइंट बनाया गया था इसमें महिला समूहों को रोजगार के लिये दुकानें आबंटित हुई, जिन्हें घेर लिया गया था। अब अतिक्रमण हटाने के निर्देश के बाद आन्दोलन शुरू हो चुका है। यह समझने की बात है कि पहले लोगों को इस प्रकार मनाया व बैठाया जाता है और जब उनकी रोजी-रोटी का जम-जमाव हो तो हटाया जाता है।

कालेज शिफ्ट करने से लोगों में रोष

नैनीताल। बेतालघाट ब्लाक के रा.इण्टर कालेज ताड़ीखेत को रा.इण्टर कालेज लोहाली में शिफ्ट की सूचना से ग्रामीणों में रोष है। मालिकाना हक संघर्ष समिति के शिष्टमण्डल ने कैंची धाम तहसील के एसडीएम से भेंट कर ज्ञापन सौंपा। कहा कि ताड़ीखेत से लोहाली तक पूरा रास्ता जंगल का है, जंगली जानवरों का खतरा है। प्रशासन इस आदेश को रद्द करवाए अन्यथा धरना प्रदर्शन करेंगे।

नैनीताल-भवाली धारण क्षमता सर्वे

नैनीताल। बढ़ती जनसंख्या और वाहनों को देखते हुए नैनीताल और भवाली की धारण क्षमता का सर्वे होगा। शासन ने इसके लिए उत्तराखण्ड पर्यटन विकास बोर्ड को जिम्मेदारी सौंपी है। इसके लिए नैनीताल और भवाली मार्ग पर कैमरे लगाए जाएंगे। इसी तरह का सर्वे कैंची धाम क्षेत्र में भी किया जाएगा। सर्वे के बाद शासन यहाँ आने वाले लोगों के लिये पंजीकरण की व्यवस्था लागू कर सकता है।

24 व 28 जुलाई को रहेगा अवकाश

उत्तराखण्ड में त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव के मतदान के लिये 24 व 28 जुलाई को चरणबद्ध ढंग से सार्वजनिक अवकाश होगा। इसमें शासकीय, अशासकीय कार्यालय, शिक्षण संस्थान, अर्द्ध निकाय व व्यापारिक प्रतिष्ठानों में कार्यरत कार्मिकों व मजदूरों को मतदान मिलेगा।

62 नालों पर अतिक्रमण चिन्हित

नैनीताल। शहर के ब्रिटिशकालीन 62 नालों पर अतिक्रमण हटाने के लिए प्रशासन ने 11 सदस्यीय टीम गठित की है जो 15 दिन के भीतर अपनी रिपोर्ट देगी। डीएम वन्दना सिंह ने नालों में अतिक्रमण चिन्हित करने के निर्देश दिये थे। टीम जीआईएस, जीपीएस, ड्रोन और बन्दोबस्ती नक्शे के आधार पर सर्वे कर सूची तैयार कर रही है। इस रिपोर्ट के आधार पर कार्रवाई होनी है।

पहाड़ से लेकर मैदान तक मानसून का कहर जारी, भूस्खलन से ठहराव

उत्तराखण्ड में मानसून का कहर जारी है। मैदान से लेकर पहाड़ तक बरस रहे मेघ में नदी-नाले उफान पर हैं। वहीं भूस्खलन होने से कई मुख्य सड़कें और सम्पर्क मार्ग अवरुद्ध हैं। चारधाम यात्रा पर भी काफी हद तक प्रभावित हो रही है।

देहरादून और आसपास के मैदानी इलाकों में भारी बारिश से जनजीवन अस्त-व्यस्त हुआ। जगह-जगह जलभराव होने से स्मार्ट सिटी की पोल खुल गई।

चमोली, रुद्रप्रयाग, पौड़ी, उत्तरकाशी, टिहरी पिथौरागढ़, अल्मोड़ा, चम्पावत, नैनीताल में कुछ क्षेत्रों में दो-तीन दौर की तेज बारिश व भूस्खलन के कारण जगह जगह सड़कें बन्द हुई। बदरीनाथ राजमार्ग भी भूस्खलन होने से सिरोबगड़ के पास अवरुद्ध रहा। इससे लोगों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर आवागमन करने में दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। गंगोत्री हाईवे पर यातायात ठप होने का सिलसिला जारी है। भटवाड़ी से आगे स्वरीगाड़ के पास भारी मलबा बोल्डर गिरने से खतरा हो रहा है।

कोर्ट और आयोग का रुख से झटके

त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव में न्यायालय और चुनाव आयोग के रूख से नित नये झटके देखने को मिल रहे हैं। सवाल भी उठ रहे हैं कि चुनाव पहले ही देर से हो रहे हैं, ऊपर से कैसी तैयारी है? कोर्ट ने एक याचिका की सुनवाई करते हुए पूछ लिया कि जिनके नाम पंचायतों और निकायों दोनों की मतदाता सूची में दर्ज हैं वे कैसे आए? जबकि राज्य निर्वाचन आयोग के दिशा निर्देशों का हवाला बता चुनाव प्रक्रिया बराबर चल रही है। कुल मिलाकर झटके बराबर हैं।

चिराल और शान्ति निर्विरोध

भीमताल। ब्लाक की ओखलढूंगा गुमाल गांव से चिराल बोरा और बलुवाखान प्रथम से निवर्तमान ज्येष्ठ प्रमुख हिमांशु पाण्डे की माता शान्ति पाण्डे निर्विरोध बीडीसी सदस्य चुनी गई हैं।

नैनोली कैणा से दीपक उप्रेती

गंगोलीहाट। नैनोली कैणा से दीपक उप्रेती निर्विरोध बीडीसी सदस्य चुने गये हैं। उन्होंने नैनोली कैणा, रैतोला, पाली पन्याल, धराडीकुण्ड के लोगों का आभार किया।

सास-ससुर के बाद बहुएं प्रधान-बीडीसी

बेरीनाग। रीठा ग्रामसभा में पूर्व प्रधान जो 1962 से इस ग्रामसभा का नेतृत्व करने वाले बालादत्त धारीयाल की दोनों बहुएं निर्विरोध चुनी गई हैं। एक प्रधान और दूसरी बीडीसी सदस्य। प्रधान जी की पत्नी भी पहले नेतृत्व कर चुकी हैं।

पूर्व प्रमुख संजय नेगी फिर बीडीसी

रामनगर। टेड़ा क्षेत्र पंचायत सीट पर पूर्व ब्लाक प्रमुख संजय नेगी निर्विरोध चुने गये हैं। यहाँ नामांकन कराने वाले 5 अन्य ने अपने नाम वापस ले लिये थे।

दरकोट में मनोज पांगती निर्विरोध

मुनस्यारी। दरकोट में मनोज सिंह पांगती निर्विरोध ग्राम प्रधान चुने गये हैं। ग्राम वासियों और प्रवासियों ने काफी मंथन के बाद अनुभवी मनोज पांगती के पक्ष में एकजुटता दिखाई।

भूपेन्द्र सिंह अखुली से प्रधान

पिथौरागढ़। ग्राम पंचायत अखुली से भूपेन्द्र सिंह को निर्विरोध पधान चुनकर ग्राम वासियों ने एकजुटता और शान्ति के माहौल का परिचय दिया।

यमुना सनवाल निर्विरोध

हल्द्वानी। गौलापार खेड़ा की यमुना सनवाल निर्विरोध प्रधान चुनी गई हैं। समाजसेवी बसन्त सनवाल और उनकी पत्नी यमुना सामाजिक कार्यों में हमेशा से जुड़े हुए हैं। क्षेत्रवासियों ने उन्हें अवसर दिया।

रैमजे में हो रही निःशुल्क डायलिसिस

नैनीताल। शहर और आसपास के क्षेत्र में लोगों में किडनी की समस्या बढ़ चुकी हैं। प्रतिदिन लगभग 5-6 मरीज रैमजे अस्पताल में डायलिसिस के लिए पहुँच रहे हैं। यहाँ हंस फाउण्डेशन की ओर से संचालित सेन्टर में 150 से ज्यादा मरीजों को दो शिफ्ट में निःशुल्क डायलिसिस की जा रही है। डायलिसिस सेन्टर के सीनियर तकनीशयन सचित्र ठाकुर के अनुसार अस्पताल में प्रतिदिन दो शिफ्ट में तीन-तीन की संख्या में छह लोगों की डायलिसिस की जाती है। बाहर एक डायलिसिस के दौरान कम से कम तीन हजार का खर्च आता है। एक माह में यहाँ 150 से ज्यादा मरीजों की डायलिसिस की जा रही है। सीएमओ डॉ. हरीश चन्द्र पन्त बताते हैं कि रैमजे अस्पताल में हंस फाउंडेशन की ओर से संचालित डायलिसिस सेन्टर से मरीजों को लाभ मिल रहा है। यह शहर के साथ आसपास के मरीजों को लाभ दे रहा है।

बद्रीकेदार मन्दिर समिति बोर्ड बैठक

देहरादून। बद्रीनाथ केदारनाथ मन्दिर समिति की पहली बोर्ड बैठक में वित्तीय वर्ष 2025-26 के लए 127 करोड़ का बजट पारित किया गया। इसके अलावा समिति के अधीन आने वाले मन्दिरों के प्रबन्धन व श्रद्धालुओं को सुगम व सुरक्षित यात्रा पर चर्चा की गई। मन्दिर समिति के कैनाल रोड स्थित कार्यालय में समिति के अध्यक्ष हेमन्त द्विवेदी की अध्यक्षता में हुई बैठक में बीते माह केदार घाटी में हुए हेलीकाप्टर हादसे पर शोक प्रकट कर दिवंगत आत्माओं की शान्ति के लिये दो मिटन का मौन रखा। बैठक का संचालन करते हुए समिति मुख्य कार्याधिकारी विजय प्रसाद थपलियाल ने बद्रीकेदार मन्दिर समिति नवनियुक्त पदाधिकारियों का स्वागत किया। वित्त अधिकारी मनीष कुमार उप्रेती ने बजट का प्रस्ताव रखा। अध्यक्ष द्विवेदी के नेतृत्व में शिष्टमण्डल ने सीएम से कर्मचारियों के नियमितीकरण की मांग की।

नैनीताल प्रवेश 300 शुल्क वसूली शुरू

नैनीताल। सरोवर नगरी में आने वाले बाहरी वाहन चालकों को लेकब्रिज शुल्क के रूप में 300 रुपये चुकाने हैं। जिले के यूके 04 नम्बर के वाहनों से 200 रुपये शुल्क लिया जा रहा है। शहर के लोगों को पहले की तरह वाहन पास की सुविधा होगी।

बताते चलें कि नगर पालिका पहले लेकब्रिज शुल्क के 110 रुपये शुल्क लेती थी। इस वर्ष पालिका ने लेकब्रिज का ठेका दिया तो मामला हाईकोर्ट पहुँच गया। इसके बाद हाईकोर्ट के निर्देश पर पालिका ने निजी कर्मचारियों पर स्वयंसेवी संस्थाओं की महिलाओं को साथ लेकर लेकब्रिज शुल्क वसूली शुरू की। इसके बाद पालिका बोर्ड की बैठक में बाहरी वाहनों के लिए ऑनलाइन 300 ऑफलाइन 500 रुपये शुल्क तय कर इसे गजट नोटिफिकेशन के लिए भेजा गया। एक जुलाई को गजट नोटिफिकेशन के बाद पालिका के ईओ ने इसे जारी कर दिया है। पालिकाध्यक्ष समेत कई ने इस पर सवाल उठाए लेकिन लेकब्रिज के पास सम्बन्धित बोर्ड लगा कार्य शुरु हो गया।

सेना की वीरता को समर्पित सिन्दूर आम

पन्तनगर। जीबी पन्त कृषि विश्वविद्यालय के वरिष्ठ बागवानी वैज्ञानिक डॉ.ए.के. सिंह के नेतृत्व में वैज्ञानिकों ने सैनिकों के ऑपरेशन सिन्दूर में पराक्रम को समर्पित आम की एक नई किस्म 'सिन्दूर' विकसित की है। डॉ.सिंह ने कहा कि आम की नई प्रजाति का नाम सिन्दूर भारतीय सेना के सम्मान में रखा गया है। यह आम की खासियत है कि सामान्य आम की तरह गर्मियों में नहीं बल्कि शरद ऋतु में तैयार होता है।

कविता महर बीडीसी मलोन बनी

मुनस्यारी। क्षेत्र पंचायत मलौन से डॉ. कविता महर निर्विरोध बीडीसी सदस्य चुनी गई। ब्लाक प्रमुख के लिये कांग्रेस की प्रबल दावेदार हैं।

रैगांव बाराकोट से मनीषा कालाकोटी

लोहाघाट। जिला पंचायत रैगांव बाराकोट से मनीषा कालाकोटी निर्विरोध चुनी गई।

परिक्रमा

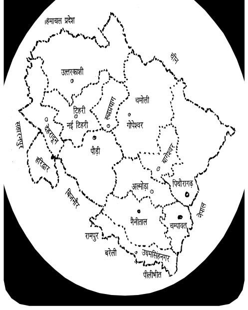

बबीता चुफाल निर्विरोध बीडीसी

डीडीहाट। निवर्तमान ब्लाक प्रमुख बबीता चुफाल भड़गाँव सीट पर निर्विरोध क्षेत्र पंचायत सदस्य चुन ली गई।

खूना से सुनील चन्द बीडीसी

पिथौरागढ़। भाजपा के मूनाकोट मण्डल अध्यक्ष सुनील चन्द (सोनू चन्द) खूना से निर्विरोध क्षेत्र पंचायत सदस्य चुने गये

पतलिया से बीडीसी सुरेन्द्र नगदली

नैनीताल। क्षेत्र पंचायत पतलिया से युवा सुरेन्द्र नगदली निर्विरोध बीडीसी सदस्य चुने गये हैं।

विशाखा खेतवाल चौरा जिपं सदस्य

बागेश्वर। जिला पंचायत चौरा से विशाखा खेतवाल जिला पंचायत सदस्य चुनी गई हैं। कपकोट विधानसभा क्षेत्र की इस सीट पर बरखा खेतवाल द्वारा नामांकन वापस लेने के बाद विशाखा की जीत हुई।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

यक्ष के एक सौ.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

एक सौ चौबीस सवाल युधिष्ठिर से किए। सवालों की रेंज बड़ी व्यापक है और पढ़ते ही बनती है। यहाँ सभी सवाल-जवाब दोहरा पाना सम्भव नहीं पर कुछ सवाल-जवाब तो बहुत ही महत्वपूर्ण हैं और हमारी सोच का अविभाज्य हिस्सा बन चुके हैं। मसलन पहले चार सवाल-जवाब एक अलग ही किस्म के हैं। 1. सूर्य को कौन आकाश में ऊपर उठाता है? सूर्य को आकाश में ब्रह्म ऊपर उठाता है। 2. सूर्य के चारों ओर कौन चलते हैं? देवता सूर्य के चारों ओर चलते हैं। 3. कौन सूर्य को अस्त करता है? धर्म उसे अस्त करता है। 4. सूर्य किसमें प्रतिष्ठित है? सूर्य सत्य में प्रतिष्ठित है। इसमें से एक-एक सवाल की गहराई में जाइए तो पूरा चिन्तन उसके पीछे समझ में आने लगता है। इतने अधिक दार्शनिक किस्म के सवालों के साथ इन दो सवालों को रखकर देखें तो कैसा लगता है?

1. खेती करने वालों के लिए कौन सी वस्तु श्रेष्ठ है? उनके लिए वर्षा सर्वश्रेष्ठ है। 2. बिखरने के बाद क्या सर्वश्रेष्ठ है और युधिष्ठिर का जवाब जाहिर तौर पर कहता है : बीज यानी सवाल शुद्ध दार्शनिक स्तर के हैं तो रोजमर्रा की जिन्दगी से भी उनका ताल्लुक है और अगर युधिष्ठिर के पास हर सवाल का जवाब है तो निश्चित ही वे धर्म और सामान्य जीवन, दोनों की ही गहरी जानकारी रखते हैं।

ज्यादा न सही, पर दो तरह के सवालों के बारे में हम जरूर कुछ कहना चाहेंगे। एक का सम्बन्ध ब्राह्मण से है। अपने नौंवे सवाल में यक्ष पूछता है कि 'ब्राह्मण में देवतत्व क्या है' तो युधिष्ठिर का जवाब है कि स्वाध्याय, यानी वेदों का स्वाध्याय करने वाले ब्राह्मण में ही देवत्व का आधान होता है। अपने एक सौ चौदहवें सवाल में यक्ष फिर से पूछते हैं और इस बार खासा खुलासा करके पूछते हैं कि किस कारण से व्यक्ति को ब्राह्मण माना जाए- वंश से, आचार से, स्वाध्याय से या शास्त्रों को सुनने से? तो इस बार युधिष्ठिर ने अच्छे आचार को ही ब्राह्मणत्व की निशानी माना है। यानी दोनों ही बार युधिष्ठिर ने जन्म से ब्राह्मण त्व नहीं माना। यही बात कृष्ण ने गीता में कहा है चातुर्वण्यं का सम्बन्ध गुणों से है और कर्म से है। (अर्थात् जन्म से नहीं)- चातुर्वण्यं मयां सृष्टं गुणकर्मविभागशः (गीत, 4.13)। पर व्यवहार में क्या हो रहा था? जवाब चाहिए तो कृपया कर्ण का जीवन देख लीजिए। जिन्हें महज इस कारण, श्रेष्टठ महापुरुष के गुणों और वैसे ही कर्म से युक्त होने के बावजूद जीवन भर अपमानित और तिरस्कृत होना पड़ा क्योंकि वे सूतपुत्र मान लिए गए थे और सूत को छोटी जाति मान लिया गया था। विचार और व्यवहार के स्तर पर कितना दोहरा जीवन है यह।

दूसरा प्रसंग एक सौ बीसवें सवाल से जुड़ा है। सवाल किया गया कि इस पृथ्वी पर सबसे बड़ा आश्चर्य क्या है? युधिष्ठिर ने जो जवाब दिया, वह हमारे देश के लोगों की जुबान पर इस कदर चढ़ गया है कि शायद उन्हीं विचारों के कारण कहा जाता है कि हर भारतीय जन्म लेते वक्त ही आधा दार्शनिक होता है। जवाब था-हर रोज दिन-रात प्राणी मर रहे हैं, पर जो बचे हुए हैं वे समझते हैं कि वे हमेशा बचे रहेंगे, इससे बड़ा आश्चर्य और क्या हो सकता है?

वनपर्व के अध्याय 313 में शामिल इस विराट सम्वाद के अन्त में जो हुआ, उससे जो युधिष्ठिर के चरित्र को सच में ही हिमालय के शिखर पर पहुंचा दिया है। युधिष्ठिर के उत्तरों से सन्तुष्ट यक्ष ने कहा कि युधिष्ठिर अपने एक भाई का जीवन उनसे मांग सकते हैं, युधिष्ठिर ने नकुल का जीवन मांग लिया।

(साभार नवभारत टाइम्स)

------स्मृतियाँ------

हीरा सिंह धर्मशक्तू

दमयन्ती पांगती

'पिघलता हिमालय' अपनी स्थापना के 48वें वर्ष में प्रवेश करते हुए अनगिनत यादों के सफर में है। इसके पन्नों में हिमालय का वह इतिहास और वह लोग हैं जिन्होंने अपने समाज के लिये हमेशा तरक्की का रास्ता सोचा। ऐसी ही दो विभूतियों का स्मरण किया जा रहा है-

नाकुरी पट्टी धरमघर के स्व.हीरा सिंह धर्मशक्तू एक शिक्षक के रूप में अपने इलाके के जाने-माने व्यक्तित्व थे। 1978 से पहले जब पिघलता हिमालय समाचार पत्र का नाम सूझा जा रहा था उसमें हीरा मास्साब भी थे। शिक्षक की भूमिका में वह अपने विद्यार्थियों और समाजसेवी के रूप में समाज का मार्गदर्शन करते रहे। इनका परिवार आज भी अपनी परम्परा में अग्रणीय है।

दिगतड़ यानी डीडीहाट की प्रथम नगर पंचायत अध्यक्ष रही स्व. दमयन्ती पांगती ने हमेशा अपने समाज को जोड़ने और सामाजिक कार्यों में अग्रणीय भूमिका निभाई। महिला संगठन सहित तमाम संस्थाओं में नेतृत्व की भूमिका के अलावा वह सांस्कृतिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करती थीं। पिघलता हिमालय परिवार के वरिष्ठ सहयोगी के रूप में आज भी उनका पूरा परिवार जुड़ा है।

रानीखेत में 11 से 17 अगस्त तक होगी अग्निवीर भर्ती रैली

रानीखेत। कुमाऊँ रेजीमेंट केन्द्र रानीखेत में 11 से 17 अगस्त तक यूनिट मुख्यालय कोटा के तहत अग्निवीर भर्ती रैली आयोजित की जाएगी। रैली सोमनाथ ग्राउण्ड में होगी। इस रैली में वही अभ्यर्थी भाग ले सकेंगे जिनके पास कुमाऊँ रेजीमेंट की ओर से जारी अधिकृत भर्ती सार्टिफिकेशन और सम्बन्धित दस्तावेज उपलब्ध होंगे। 11 अगस्त को उत्तराखण्ड के सभी जिलों के युवाओं के लिये अग्निवीर जनरल ड्यूटी की भर्ती होगी। 12 अगस्त को उनके दस्तावेज की जाँच की जाएगी। 13 अगस्त को उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, मध्य प्रदेश, दिल्ली, बिहार, झारखण्ड, छत्तीसगढ़ और पूर्वोत्तर राज्यों के अभ्यर्थी अग्निवीर जीडी के पद के लिए शामिल हो सकेंगे। 14 को अग्निवीर ट्रेडमैन, म्यूजिशियन और ऑफिस असिस्टेंट पदों के लिए सभी राज्यों के रिलेशनधानी अभ्यर्थियों की भर्ती होगी, जिनके दस्तावेज 15 अगस्त को जाँचे जाएंगे। 16 अगस्त को विशिष्ट खिलाड़ियों की अग्निवीर जीडी भर्ती होगी। 17 अगस्त को उनके दस्तावेज का निरीक्षण किया जाएगा।

देवीधुरा कौतिक में पॉलीथिन प्रतिबन्धित

चम्वापत। देवीधुरा कौतिक में पॉलीथिन और थर्माकाल प्रतिबन्धित रहेगा। 5 से 16 अगस्त तक शक्तिपीठ माँ बाराही धाम देवीधुरा में होने वाले आयोजन की तैयारियां जारी हैं। इसी बीच डीएम मनीष कुमार ने बताया कि सीएम पुष्कर धामी ने धाम की व्यवस्थाओं में को प्राथमिकता दे करने का निर्देश दिया था। कौतिक को देखते हुए अधिकारियों को निर्देशित किया गया है कि किसी भी तरह की ढिलाई बर्दाश्त नहीं होगी। मेले में पॉलीथिन और थर्माकॉल प्रतिबन्धित रहेगा। 9 अगस्त को होने वाली बग्वाल के लिये विशेष तैयारी की गई है। कहा है अपनी ड्यूटी आस्था के रूप में लें और निर्वहन करें।

Enjoy Beauty of
Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

घर से बाहर अपनों का साथ
होटल लक्ष्य इन
मदकोट सम्पर्क
नरेन्द्र सिंह रावत 7351285555

जंगपांगी जनरल स्टोर
मदकोट रोड, दरांती मनुस्यारी
(सीमेन्ट, पेण्ट, हार्डवेयर सामग्री के लिये सुलभ स्थान मो.- 9760342346

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
मो.न. 8958525979, 9411134775
नानासेम, मुनस्यारी
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
फोन सम्पर्क- 05961-222236
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

बाली घाट से कोटमन्या तक सड़क चौड़ीकरण में बहुमूल्य जंगल बचाने की मांग

कोटमनया से धरमघर तक तीन जलस्रोत व सैकड़ों वृक्ष हैं इस घेरे में

बागेश्वर/बेरीनाग। कपकोट में डंगोली-सलानी-दाड़ीमखेत-हडबाड़-पन्द्रहपाली-बालीघाट-दोफाड़-धरमघर-कोटमन्या मोटर मार्ग को लेकर जबर्दस्त खुसर-फुसर होने लगी है। चड़क चौड़ीकरण के फण्डे में कहीं ऐसा न हो कि सैकड़ों वृक्षों की बलि चढ़ जाए। इसी चिन्ता में पर्वतीय पर्यावरण संरक्षण समिति ने उत्तराखण्ड मानवाधिकार आयोग को पत्र भेजा है। इसके अलावा वन एवं पर्यावरण मंत्री भारत सरकार को पहले ही पत्र भेजते हुए कहा है कि बाली घाट से कोटमन्या तक सड़क चौड़ीकरण के लिये हजारों वृक्षों की कटान के लिये गिनती कार्य का पता चला है जिसमें अधिकांश मिश्रित प्रजाति के सैकड़ों वर्ष पुराने पेड़ हैं।

ये पूरा माजरा क्या है इसको जानना चाहिये और स्थानीय भौगोलिक हालातों के साथ पर्यावरणीय जागरूकता पर ध्यान देना होगा। पर्यावरण संरक्षण समिति की ओर से शोभा विद्यार्थी, सचिव डॉ. रमेश पन्त सहित तमाम लोगों ने मंत्री को भेजे गये पत्र में चिन्ता जताई है कि बाँज, बुरांश, काफल आदि असंख्य प्रजातियों के नष्ट होने का खतरा लग रहा है। विशेष रूप से धरमघर से कोटमन्या चौकोड़ी तक का जंगल और यहाँ पायी जाने वाली बहुमूल्य एवं विलुप्त प्रजातियां वन्य पशु-पक्षियों को बचाया जाना चाहिये। कहा है कि सड़क के मध्य से दोनों ओर विविध प्रकार के पेड़ों से लदे दृश्य को देख पर्यटक आकर्षित होता है। यहाँ की प्राकृतिक सौन्दर्यता को देखते हुए महात्मा गांधी की अनुयाई सरला बहन (कैथरीन लीमन) ने जीवन के अन्तिम वर्षों में इस इलाके को अपना कर्म स्थली बनाया। बताते हैं कि उन्हीं दिनों इसी सड़क को चौड़ा करने के लिये पेड़ों की कटाई होनी थी, उन्होंने शासन-प्रशासन को कहकर इन पेड़ों को कटने से बचाया था। एक साल पूर्व ही सड़क का डामरीकरण हुआ है। इन सारी स्थितियों के बाद भी यदि पेड़ कटान होते हैं तो वह असहनीय है। पूरे जंगल को संकट से बचाया जाना चाहिये।

बताया जा रहा है कि कोटमन्या से धरमघर तक के मार्ग में तीन जल स्रोत अते हैं तथा 2000 से 2500 तक के चौड़ी पत्तियों के पेड़ आते हैं। साथ ही इस मार्ग में दस हजार पेड़ बहुत पुराने हैं, इन बेजुबानों को संरक्षित रखना होगा।

समिति ने इसी प्रकार सचिव, मानवाधिकार आयोग को पत्र भेजकर अपना पक्ष रखते हुए कहा है कि विवेकपूर्ण निर्णय लेकर आयोग आयोग हिमालयी पर्यावरण को संकट से बचाएगा।

पूर्व कर्नल यशपाल सिंह नेगी का प्रधान बनना भी प्रेरणा दे रहा है

पौड़ी। बिरगणा ग्राम पंचायत से पूर्व कर्नल यशपाल सिंह नेगी का निर्विरोध प्रधान होना सबके लिये प्रेरणा दे रहा है। बड़े पद में रहे और दिल्ली रहे रहने के बाद अपने ग्राम के लिये कुछ करने की ललक में श्री नेगी ने जो निर्णय लिया उसकी सराहना हो रहा है। सीएम पुष्कर धामी इसे रिवर्स पलायन के प्रेरणादायक उदाहरण मानते हैं। ग्रामवासियों में कर्नल नेगी की उपस्थिति को क्षेत्र के विकास के लिये महत्वपूर्ण बताया है और उन्हें बहुत उम्मीदें हैं। कर्नल साहब अपनी माटी के लिये समर्पित हैं तभी तो उन्होंने सेवानिवृत्त होते ही अपनी पत्नी बीना के साथ गाँव का रूख किया था और बंजर खेतों को खोदने लगे। गाँव के बच्चों को अंग्रेजी पढ़ाते और अपने अनुभवों का लाभ देने लगे।

हयातसिंह-मथुरादेवी परम्परा के वाहक हैं पंकज सिंह बृजवाल

मुनस्यारी। दुम्मर से पंकज बृजवाल निर्विरोध प्रधान बने हैं। बहुत ही व्यवहार कुशल व सामाजिक व्यक्ति के रूप में इनको देखा जा सकता है। दरअसल वह प्रधान मात्र न होकर एक परम्परा के वाहक भी हैं। इनके पिता हयात सिंह जी अपने समय के जानेमाने प्रधान रहे हैं, उस दौर के कार्यों को लोग आज भी याद करते हैं। दूरस्थ क्षेत्र में ईमनदारी के साथ कार्य और व्यवहार उनकी पहचान थी। इनकी माता श्रीमती मथुरादेवी बृजवाल जिला पंचायत सदस्य के रूप में भी समाज से जुड़ी रहीं। इसके बाद पंकज बृजवाल ने जिस प्रकार से अपनी परम्परा को कायम रखा है वह दुम्मर क्षेत्र के लिये गर्व की बात है। उन ग्रामसभाओं के लिये भी प्रेरणा दायक है कि जहाँ प्रधान बनने के लिये विवाद हो जाते हैं।

न तेरा न मेरा Thats
APNA GHAR चौकोड़ी
HOTEL RESTRO BANQUET
मो.- 9458920379, 6396098804
YOGA MEDITATION || LIVE MUSIC || HOMELY FOOD || BIRTHDAY WEDDING
Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)
पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

Hotel
Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

Hayat Paradise
Bus Station
Munsiari
Ph. 09411556700, 9997733070

धमोत होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
www.mountainheights.in
मो. 9760007148

पिघलता हिमालय स्थापना के 48वें वर्ष में प्रवेश की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-
खड़क सिंह बगड्वाल
जगदम्बा नगर, भोटिया पड़ाव
हल्द्वानी

पृथ्वीपाल सिंह रावत
एडवोकेट
ऊँचापुल
हल्द्वानी

इन्द्रा जंगपांगी
निकट- शिव मन्दिर
जोहार नगर
हल्द्वानी

नवीन गारमेंट्स
मेन बाजार, बेरीनाग
नवीन चन्द्र पन्त

पन्त मेडिकल
मेन बाजार
गंगोलीहाट
भगवती प्रसाद पन्त

भीम कुमार
पूर्व जि.पं.सदस्य
नया बाजार
बेरीनाग

पी.बी.कलेक्शन
थाना रोड, बेरीनाग
प्रकाश बोरा

भगत सिंह बृजवाल
मसुरिया
पांखू

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।
सम्पादक: श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)